Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

शहडोल संभाग में पर्यटन विकास : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

डॉ. लक्ष्मी केवट
अतिथि विद्वान, भूगोल विभाग
शासकीय पण्डित माधवराव सप्रे महाविद्यालय
पेण्डा रोड, गौरेला, जिला-जी.पी.एम. (छ.ग.)

सारांश (Abstract)

शहडोल संभाग, जो मध्य प्रदेश के शहडोल, उमरिया तथा अनूपपुर जिलों से मिलकर बना है, विंध्य तथा मैकल पर्वत श्रेणियों के मध्य स्थित एक भौगोलिक रूप से विशिष्ट तथा पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत सम्भावनाशील क्षेत्र है। इस संभाग में बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, अमरकंटक, बाणसागर बांध, विराट मंदिर तथा क्षीरसागर जैसे धार्मिक, प्राकृतिक, पुरातात्विक एवं जलाशय-आधारित पर्यटन स्थल विद्यमान हैं, जो इसे मध्य प्रदेश के सबसे विविधतापूर्ण पर्यटन क्षेत्रों में सम्मिलित करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में शहडोल संभाग के प्रमुख पर्यटन स्थलों का भौगोलिक विश्लेषण, पर्यटन विकास के समक्ष उपस्थित चुनौतियों, जैसे अवसंरचनात्मक कमियाँ, संपर्क-सुविधाओं का अभाव तथा असमन्वित प्रचार-प्रसार, तथा इस क्षेत्र में विद्यमान पर्यटन संभावनाओं, जैसे धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन, वन्यजीव पर्यटन, जल-पर्यटन तथा जनजातीय पर्यटन, का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन द्वितीयक स्रोतों, जिला गजेटियरों, पर्यटन विभाग के प्रतिवेदनों तथा समसामयिक शोध सामग्री पर आधारित है। निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि शहडोल संभाग में पर्यटन विकास की अपार सम्भावनाएँ विद्यमान हैं, परन्तु अवसंरचनात्मक तथा नीतिगत सीमाओं के कारण यह क्षेत्र अपनी वास्तविक पर्यटकीय क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर पा रहा है, जिसके समाधान हेतु समन्वित भौगोलिक एवं विकासात्मक रणनीति की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द (Keywords)

शहडोल संभाग, पर्यटन विकास, बांधवगढ़, अमरकंटक, बाणसागर बांध, विराट मंदिर, भौगोलिक अध्ययन, अवसंरचना, जनजातीय पर्यटन, संभावनाएँ, चुनौतियाँ।

प्रस्तावना

शहडोल संभाग मध्य प्रदेश के पूर्वोत्तर भाग में स्थित एक प्रशासनिक तथा भौगोलिक इकाई है, जिसका गठन शहडोल, उमरिया तथा अनूपपुर तीन जिलों से हुआ है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र मध्य भारत की विंध्य तथा मैकल पर्वत श्रेणियों के संगम-बिन्दु पर स्थित है, जिससे यहाँ की भू-आकृति पहाड़ी, वनाच्छादित तथा नदी-घाटियों से युक्त है। इस भौगोलिक विविधता के परिणामस्वरूप शहडोल संभाग को 'देश का दिल' अर्थात भारत के मध्य भाग में स्थित एक प्राकृतिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र के रूप में वर्णित किया जाता है। जनजातीय बाहुल्य इस संभाग में गोंड, बैगा तथा कोल जनजातियों की सघन उपस्थिति इसकी सामाजिक संरचना को विशिष्ट बनाती है, जबकि इसकी भौगोलिक स्थिति इसे धार्मिक, वन्यजीव, जलाशय-आधारित तथा पुरातात्विक पर्यटन के एक बहुआयामी केन्द्र के रूप में स्थापित करती है।

शहडोल संभाग के अंतर्गत उमरिया जिले में स्थित बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, जो विश्व के पहले श्वेत बाघ मोहन की खोज-स्थली होने के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात है, इस संभाग के पर्यटन का सबसे प्रमुख आकर्षण है। इसके अतिरिक्त अनूपपुर जिले में स्थित अमरकंटक, जो नर्मदा तथा सोन नदियों का उद्गम स्थल होने के कारण धार्मिक दृष्टि से अत्यंत पवित्र माना जाता है, तथा शहडोल जिले में स्थित बाणसागर बांध एवं विराट मंदिर जैसे स्थल भी इस संभाग की पर्यटकीय विविधता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। यह भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विविधता शहडोल संभाग को धार्मिक पर्यटन, वन्यजीव पर्यटन, जल-क्रीड़ा पर्यटन तथा पुरातात्विक पर्यटन के एक समन्वित केन्द्र के रूप में विकसित होने की अपार सम्भावना प्रदान करती है।

तथापि इन प्रचुर सम्भावनाओं के बावजूद शहडोल संभाग का पर्यटन विकास अपेक्षाकृत धीमी गति से हुआ है। यह संभाग मध्य प्रदेश के अपेक्षाकृत कम विकसित तथा दुर्गम क्षेत्रों में सम्मिलित है, जहाँ सड़क, रेल तथा वायु संपर्क की सीमाएँ, आवास एवं आतिथ्य सुविधाओं का अभाव, तथा समुचित प्रचार-प्रसार की कमी पर्यटन विकास के मार्ग में महत्वपूर्ण बाधाएँ प्रस्तुत करती हैं। राष्ट्रीय स्तर पर भी यह तथ्य स्वीकार किया गया है कि भारत के अनेक उच्च-सम्भावना वाले आध्यात्मिक, ग्रामीण तथा पारिस्थितिकी-पर्यटन स्थल निम्नस्तरीय सड़क गुणवत्ता तथा अंतिम-बिन्दु संपर्क-सुविधाओं (लास्ट-माइल कनेक्टिविटी) की कमी के कारण दुर्गम बने हुए हैं, और शहडोल संभाग भी इस राष्ट्रीय प्रवृत्ति का एक प्रतिनिधि उदाहरण प्रस्तुत करता है।

वर्तमान समय में भारत सरकार तथा मध्य प्रदेश शासन दोनों ही पर्यटन क्षेत्र को राष्ट्रीय एवं राज्य-स्तरीय आर्थिक विकास के एक प्रमुख इंजन के रूप में मान्यता दे रहे हैं। केन्द्र सरकार द्वारा चालू बजट में राज्यों के साथ साझेदारी में पचास शीर्ष पर्यटन स्थलों के विकास की पहल की गई है, जिसमें अवसंरचना की मजबूती, यात्रा-सम्बन्धी बाधाओं में कमी तथा संपर्क-सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण को विशेष प्राथमिकता दी गई है। इसके साथ ही उड़ान (UDAN) योजना के अंतर्गत दूरस्थ स्थलों को महानगरों से जोड़ने वाले पर्यटन-विशिष्ट हवाई मार्गों को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। ऐसी नीतिगत परिस्थितियों में शहडोल संभाग, जो अपनी समृद्ध पर्यटकीय सम्पदा के बावजूद अभी तक राष्ट्रीय पर्यटन विकास योजनाओं में अपेक्षाकृत सीमित प्राथमिकता प्राप्त करता रहा है, इन नई नीतिगत पहलों का समुचित लाभ उठाने की स्थिति में हो सकता है, बशर्ते स्थानीय तथा राज्य स्तर पर इसके लिए ठोस प्रयास किए जाएँ।

इस पृष्ठभूमि में शहडोल संभाग के पर्यटन विकास का एक व्यवस्थित भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, जिसमें इस क्षेत्र के प्रमुख पर्यटन स्थलों, उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं का समग्र विश्लेषण किया जाए। प्रस्तुत शोध पत्र इसी उद्देश्य से शहडोल संभाग के पर्यटन भूगोल का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, जिससे इस क्षेत्र की पर्यटकीय क्षमता के समुचित उपयोग तथा सतत विकास की दिशा में एक तथ्यात्मक आधार प्रस्तुत किया जा सके।

शोध पत्र का उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं। सर्वप्रथम, शहडोल संभाग की भौगोलिक संरचना तथा इस संरचना का पर्यटन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य है। द्वितीयतः, शहडोल संभाग के प्रमुख पर्यटन स्थलों, यथा बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, अमरकंटक, बाणसागर बांध, विराट मंदिर तथा क्षीरसागर, का विस्तृत भौगोलिक तथा ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करना भी इस शोध पत्र का महत्वपूर्ण लक्ष्य है। तृतीयतः, इस संभाग में पर्यटन विकास के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों, जैसे अवसंरचनात्मक कमियाँ, संपर्क-सुविधाओं का अभाव, आतिथ्य सुविधाओं की सीमाएँ तथा असमन्वित प्रचार-प्रसार, का विश्लेषण करना भी इस अध्ययन में सम्मिलित है। चतुर्थतः, शहडोल संभाग में विद्यमान पर्यटन सम्भावनाओं, जैसे धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन, वन्यजीव पर्यटन, जल-क्रीड़ा पर्यटन तथा जनजातीय पर्यटन, का मूल्यांकन करना भी इस शोध पत्र का उद्देश्य है। अंततः, इन समस्त तथ्यों के आधार पर शहडोल संभाग में पर्यटन के सतत तथा समावेशी विकास हेतु व्यावहारिक एवं क्रियान्वयन-योग्य सुझाव प्रस्तुत करना इस शोध कार्य का समग्र उद्देश्य है।

शोध पत्र का महत्व-

प्रस्तुत शोध पत्र अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। भौगोलिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से यह अध्ययन शहडोल संभाग के पर्यटन भूगोल का एक समग्र तथा व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो भूगोल, पर्यटन प्रबंधन तथा क्षेत्रीय नियोजन के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण सन्दर्भ सामग्री का कार्य करेगा। नीतिगत दृष्टि से यह शोध पत्र अत्यंत सामयिक है, क्योंकि मध्य प्रदेश शासन तथा भारत सरकार दोनों वर्तमान में पर्यटन क्षेत्र को आर्थिक विकास के एक प्रमुख इंजन के रूप में प्रोत्साहित कर रहे हैं, और ऐसी स्थिति में शहडोल जैसे अपेक्षाकृत अल्प-विकसित परन्तु उच्च-सम्भावना वाले क्षेत्रों का व्यवस्थित अध्ययन नीति-निर्माताओं के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

आर्थिक दृष्टि से भी यह शोध पत्र महत्वपूर्ण है, क्योंकि पर्यटन क्षेत्र रोजगार सृजन तथा समावेशी आर्थिक विकास का एक प्रमुख माध्यम है, विशेष रूप से शहडोल जैसे जनजातीय बाहुल्य तथा अपेक्षाकृत सीमित औद्योगिक विकास वाले क्षेत्र में। इस संभाग में पर्यटन के सुव्यवस्थित विकास से स्थानीय जनजातीय समुदायों, हस्तशिल्प कारीगरों तथा छोटे व्यवसायियों को प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। सामाजिक दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि सुव्यवस्थित पर्यटन विकास स्थानीय अवसंरचना, जैसे सड़क, बिजली तथा स्वास्थ्य सुविधाओं, के सुधार को भी प्रोत्साहित करता है, जिससे स्थानीय निवासियों को भी प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है।

तुलनात्मक दृष्टि से भी यह शोध पत्र सार्थक है, क्योंकि यह इस तथ्य को उजागर करता है कि शहडोल संभाग, अपनी बांधवगढ़ तथा अमरकंटक जैसी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पर्यटन सम्पदा के बावजूद, मध्य प्रदेश के अन्य विकसित पर्यटन क्षेत्रों, जैसे खजुराहो अथवा उज्जैन, की तुलना में अपेक्षाकृत कम विकसित तथा कम प्रचारित है। यह शोध पत्र इस अंतर को उजागर करते हुए यह तर्क प्रस्तुत करता है कि उचित नीति-निर्माण तथा निवेश के माध्यम से शहडोल संभाग को भी मध्य प्रदेश के अग्रणी पर्यटन क्षेत्रों में सम्मिलित किया जा सकता है।

क्षेत्रीय विकास की दृष्टि से भी यह शोध पत्र महत्वपूर्ण है, क्योंकि शहडोल संभाग मध्य प्रदेश के उन क्षेत्रों में सम्मिलित है, जो मानव विकास सूचकांक तथा औद्योगिक विकास की दृष्टि से राज्य के औसत से पीछे हैं। ऐसी स्थिति में पर्यटन क्षेत्र का सुव्यवस्थित विकास इस संभाग के लिए एक ऐसा वैकल्पिक आर्थिक मार्ग प्रस्तुत करता है, जो भारी औद्योगीकरण अथवा खनन पर निर्भर हुए बिना भी सतत आर्थिक प्रगति सम्भव बना सकता है। इस दृष्टिकोण से

यह शोध पत्र क्षेत्रीय असमानता को कम करने की दिशा में पर्यटन क्षेत्र की भूमिका को रेखांकित करने का भी प्रयास करता है, जो राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर की समावेशी विकास नीतियों के लिए भी प्रासंगिक हो सकता है।

शहडोल संभाग के प्रमुख पर्यटन स्थल-

शहडोल संभाग की पर्यटन सम्पदा को उसकी प्रकृति के आधार पर धार्मिक-सांस्कृतिक स्थल, वन्यजीव तथा प्राकृतिक स्थल, तथा जलाशय-आधारित मनोरंजक स्थल की श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। इन प्रत्येक श्रेणी के अंतर्गत आने वाले प्रमुख स्थलों का विवरण निम्नलिखित है।

शहडोल संभाग का पर्यटकीय स्वरूप : एक सांख्यिकीय अवलोकन-

शहडोल संभाग के पर्यटन के वर्तमान स्वरूप का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि इस संभाग में पर्यटकों का आगमन अत्यंत असमान रूप से वितरित है। बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, जो अपनी अंतरराष्ट्रीय ख्याति के कारण प्रतिवर्ष लाखों घरेलू तथा विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है, इस संभाग के कुल पर्यटक-आगमन का अधिकांश भाग अकेले प्राप्त करता है, जबकि अमरकंटक, बाणसागर तथा विराट मंदिर जैसे अन्य महत्वपूर्ण स्थलों पर पर्यटकों की संख्या अपेक्षाकृत सीमित रहती है। यह असमान वितरण न केवल इन स्थलों की अपेक्षाकृत कम प्रसिद्धि को दर्शाता है, अपितु यह भी स्पष्ट करता है कि संभाग की समग्र पर्यटन क्षमता का एक बड़ा भाग अभी भी अप्रयुक्त है। मौसमी दृष्टि से भी पर्यटक-आगमन में उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव देखा जाता है, जिसमें शीत ऋतु, विशेष रूप से अक्टूबर से मार्च माह के मध्य, सर्वाधिक पर्यटक-आगमन का समय होता है, जबकि वर्षा तथा अत्यधिक ग्रीष्म ऋतु में पर्यटक-संख्या में उल्लेखनीय कमी आती है, क्योंकि बांधवगढ़ जैसे वन्यजीव क्षेत्र मानसून काल में बंद रहते हैं।

बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान-

उमरिया जिले में स्थित बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान शहडोल संभाग का सर्वाधिक प्रसिद्ध तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त पर्यटन स्थल है। सन् 1968 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित यह क्षेत्र अपनी सघन बाघ-जनसंख्या तथा विश्व के पहले श्वेत बाघ मोहन की खोज-स्थली होने के कारण विशेष रूप से विख्यात है। बत्तीस पहाड़ियों से घिरा यह उद्यान ताला, मगधी, खितौली तथा पनपथा नामक चार प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट भौगोलिक तथा पारिस्थितिक विशेषताएँ हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ स्थित दसवीं शताब्दी का बांधवगढ़ किला

तथा शेष-शैय्या प्रतिमा जैसे ऐतिहासिक-पुरातात्विक स्थल इस उद्यान को केवल एक वन्यजीव गंतव्य से आगे बढ़कर एक बहुआयामी पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करते हैं, जहाँ पारिस्थितिक तथा ऐतिहासिक पर्यटन का अनूठा संगम देखने को मिलता है।

बांधवगढ़ की पर्यटकीय अवसंरचना, अन्य क्षेत्रों की तुलना में, अपेक्षाकृत सुविकसित है, क्योंकि यहाँ अनेक रिसॉर्ट्स, होटल तथा सफारी सेवाएँ उपलब्ध हैं, जो प्रतिवर्ष लाखों घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। यह उद्यान शहडोल संभाग के पर्यटन का सबसे बड़ा आर्थिक चालक है तथा स्थानीय जनजातीय समुदायों को गाइड, सफारी-चालक तथा हस्तशिल्प विक्रेता के रूप में प्रत्यक्ष रोजगार भी प्रदान करता है।

तथापि बांधवगढ़ की यह सफलता संभाग के अन्य भागों तक समान रूप से विस्तारित नहीं हो पाई है, जिससे एक प्रकार का 'द्वीपीय पर्यटन' (एन्क्लेव टूरिज्म) प्रतिरूप उभरता है, जिसमें पर्यटन-लाभ एक सीमित भौगोलिक क्षेत्र तक ही केन्द्रित रह जाता है। यह भौगोलिक असंतुलन इस बात का प्रमाण है कि बांधवगढ़ की सफलता को शहडोल संभाग की समग्र पर्यटन नीति के लिए एक प्रतिमान के रूप में उपयोग करते हुए इसे संभाग के अन्य स्थलों तक विस्तारित करने की आवश्यकता है, जिससे पर्यटन का आर्थिक लाभ अधिक व्यापक भौगोलिक क्षेत्र तथा जनसंख्या तक पहुँच सके।

अमरकंटक : नर्मदा एवं सोन नदी का उद्गम स्थल-

अनूपपुर जिले में स्थित अमरकंटक, जो मैकल पर्वत श्रेणी पर समुद्र तल से लगभग एक हजार मीटर से अधिक ऊँचाई पर स्थित है, शहडोल संभाग का सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटन स्थल है। यह स्थल नर्मदा तथा सोन नामक दो प्रमुख नदियों का उद्गम स्थल होने के कारण अत्यंत पवित्र माना जाता है, तथा यहाँ नर्मदा उद्गम मंदिर सहित अनेक प्राचीन कलचुरि-कालीन मंदिर भी स्थित हैं। भगवान शिव तथा उनकी पुत्री नर्मदा से सम्बद्ध पौराणिक आख्यान इस स्थल की धार्मिक महत्ता को और अधिक बढ़ाते हैं। इसके साथ ही कपिलधारा तथा दुग्धधारा जल-प्रपात जैसे प्राकृतिक आकर्षण भी अमरकंटक की पर्यटकीय विविधता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

अमरकंटक की पर्यटकीय महत्ता इस तथ्य से भी स्पष्ट होती है कि यह स्थल धार्मिक तीर्थयात्रियों के साथ-साथ प्रकृति-प्रेमी पर्यटकों को भी आकर्षित करता है, जो इस क्षेत्र की समृद्ध जैव-विविधता तथा शांत पहाड़ी वातावरण का आनंद लेने आते हैं। तथापि इस स्थल तक पहुँचने के लिए सड़क मार्ग की गुणवत्ता तथा दूरस्थ स्थानों से संपर्क-

सुविधाओं की सीमाएँ अभी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई हैं, जिसके कारण अमरकंटक अपनी वास्तविक पर्यटकीय क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर पा रहा है।

यह भी उल्लेखनीय है कि अमरकंटक मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ दोनों राज्यों की सीमा के निकट स्थित है, जिससे इसकी पर्यटकीय पहुँच दोनों राज्यों के पर्यटकों तक विस्तृत होने की सम्भावना है। यह भौगोलिक स्थिति अमरकंटक को केवल शहडोल संभाग अथवा मध्य प्रदेश तक सीमित न रखकर, एक व्यापक अंतर-राज्यीय धार्मिक-पारिस्थितिक पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित करने का अवसर प्रदान करती है, जिसका समुचित लाभ उठाने के लिए दोनों राज्यों के मध्य समन्वित पर्यटन-प्रचार तथा अवसंरचना-विकास रणनीति आवश्यक है।

बाणसागर बांध-

शहडोल जिले में सोन नदी पर निर्मित बाणसागर बांध मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश तथा बिहार तीन राज्यों की एक महत्वपूर्ण बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना है, जो सिंचाई तथा विद्युत उत्पादन के साथ-साथ एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में भी विकसित हुआ है। इस बांध के विशाल जलाशय के चतुर्दिक प्राकृतिक सौंदर्य तथा हरियाली इसे नौकायन, मत्स्य-पालन तथा पिकनिक जैसी मनोरंजक गतिविधियों के लिए एक आदर्श स्थल बनाती है। बाणसागर परियोजना का मुख्यालय शहडोल जिले के देवलौंद में स्थित है, जो इस परियोजना के प्रशासनिक तथा पर्यटकीय दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण केन्द्र है।

बाणसागर बांध की पर्यटकीय सम्भावना अभी भी अपेक्षाकृत अल्प-विकसित है, क्योंकि यहाँ जल-क्रीड़ा, नौका-विहार तथा जलाशय-किनारे आवास जैसी आधुनिक पर्यटन सुविधाओं का विकास सीमित है। यदि इस बांध क्षेत्र को एक समग्र जल-पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जाए, जिसमें वॉटर स्पोर्ट्स, रिसॉर्ट तथा प्रकृति-भ्रमण सुविधाएँ सम्मिलित हों, तो यह शहडोल संभाग के पर्यटन मानचित्र में एक महत्वपूर्ण अतिरिक्त आकर्षण बन सकता है।

विराट मंदिर, सोहागपुर-

शहडोल जिले के सोहागपुर में स्थित विराट अथवा विराटेश्वर मंदिर शहडोल संभाग का सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक तथा धार्मिक स्थल है। सोहागपुर, जो वर्तमान शहडोल नगर का प्राचीन नाम है, कलचुरि राजवंश की राजधानी रहा है, तथा यह मंदिर कलचुरि नरेश युवराजदेव द्वारा ग्यारहवीं शताब्दी में निर्मित कराया गया था। भारतीय

पुरातत्व सर्वेक्षण के संरक्षण में स्थित इस मंदिर की स्थापत्य शैली अत्यंत उल्लेखनीय है, जिसमें अर्धमंडप, महामंडप, अंतराल तथा वर्गाकार गर्भगृह का समावेश है। मंदिर के मुख्यद्वार पर चतुर्भुजी विष्णु, गणेश तथा वीणावादिनी की प्रतिमाएँ स्थापित हैं, जबकि बाहरी दीवारों पर दिक्पाल, शिव के विविध रूप, विष्णु के अवतार तथा मिथुन दृश्य उत्कीर्ण हैं, जो खजुराहो की स्थापत्य शैली से गहन साम्य रखते हैं।

विराट मंदिर के समीप बाणगंगा नामक जलधारा भी बहती है, जहाँ प्रतिवर्ष मकर संक्रांति के अवसर पर एक विशाल मेला आयोजित होता है, जो इस स्थल के धार्मिक महत्व को और अधिक स्पष्ट करता है। मंदिर परिसर में स्थित विवेकानंद उद्यान भी पर्यटकों के लिए एक अतिरिक्त आकर्षण है। यह मंदिर, अपनी खजुराहो-सदृश स्थापत्य कला के बावजूद, राष्ट्रीय स्तर पर अपेक्षाकृत कम प्रसिद्ध है, जो इस बात का प्रमाण है कि शहडोल संभाग की पुरातात्विक सम्पदा को अभी तक समुचित राष्ट्रीय पहचान नहीं मिल पाई है।

क्षीरसागर एवं अन्य प्राकृतिक स्थल-

शहडोल जिला मुख्यालय से लगभग बीस किलोमीटर दूर स्थित क्षीरसागर, जहाँ जोहिला तथा मुढ़ना नदियों का संगम होता है, शहडोल संभाग का एक प्रमुख पिकनिक स्थल है। इस स्थल पर संगम के निकट फैला विशाल रेतीला मैदान, जो लगभग पचास एकड़ के क्षेत्र में विस्तृत है, समुद्र-तट के समान दृश्य प्रस्तुत करता है, जिससे यह स्थल स्थानीय तथा क्षेत्रीय पर्यटकों में अत्यंत लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त शहडोल जिले के बुढ़हार तहसील में स्थित लखबरिया गुफा भी एक महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है, जो इस क्षेत्र की भौगोलिक तथा भूवैज्ञानिक विविधता को प्रदर्शित करती है। दशरथ घाट, जहाँ सोनभद्र तथा जोहिला नदियों का संगम होता है तथा जिसे वनवास काल में श्रीराम के प्रवास से जोड़ा जाता है, भी इस संभाग की पौराणिक-धार्मिक विरासत का एक अतिरिक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इन प्राकृतिक तथा पौराणिक स्थलों की उपस्थिति यह प्रमाणित करती है कि शहडोल संभाग की पर्यटन सम्पदा केवल बांधवगढ़ अथवा अमरकंटक जैसे बड़े नामों तक सीमित नहीं है, अपितु इसमें अनेक छोटे परन्तु भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल भी सम्मिलित हैं, जिनका समुचित विकास तथा प्रचार-प्रसार इस संभाग के समग्र पर्यटन अनुभव को और अधिक समृद्ध बना सकता है।

पर्यटन विकास की चुनौतियाँ-

अवसंरचनात्मक एवं संपर्क सम्बन्धी चुनौतियाँ-

शहडोल संभाग में पर्यटन विकास की सबसे बड़ी चुनौती अवसंरचनात्मक कमियों से सम्बद्ध है। इस क्षेत्र का निकटतम प्रमुख हवाई अड्डा जबलपुर में स्थित है, जो शहडोल से लगभग एक सौ तैंतालीस किलोमीटर की दूरी पर है, जिससे हवाई मार्ग से आने वाले पर्यटकों के लिए यह क्षेत्र अपेक्षाकृत दुर्गम बना रहता है। यद्यपि शहडोल रेलवे स्टेशन देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है, तथापि बांधवगढ़ तथा अमरकंटक जैसे दूरस्थ पर्यटन स्थलों तक पहुँचने के लिए सड़क मार्ग की गुणवत्ता तथा नियमित परिवहन सुविधाओं की कमी एक महत्वपूर्ण बाधा है। यह समस्या भारत के अनेक अन्य उच्च-सम्भावना वाले धार्मिक तथा पारिस्थितिकी-पर्यटन स्थलों में भी देखी जाती है, जहाँ अंतिम-बिन्दु संपर्क-सुविधाओं (लास्ट-माइल कनेक्टिविटी) का अभाव पर्यटन विकास को सीमित करता है।

इसके अतिरिक्त आवास तथा आतिथ्य सुविधाओं की गुणवत्ता तथा संख्या भी शहडोल संभाग में अपेक्षाकृत सीमित है। बांधवगढ़ को छोड़कर, जहाँ अपेक्षाकृत विकसित रिसॉर्ट तथा होटल अवसंरचना विद्यमान है, संभाग के अन्य पर्यटन स्थलों, जैसे अमरकंटक, बाणसागर तथा विराट मंदिर, में गुणवत्तापूर्ण आवास सुविधाओं का अभाव पर्यटकों को लम्बे समय तक रुकने से हतोत्साहित करता है। स्वच्छता, पेयजल तथा विश्वसनीय बिजली आपूर्ति जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी भी अनेक पर्यटन स्थलों में एक सामान्य समस्या है, जो समग्र पर्यटक-अनुभव को प्रभावित करती है।

प्रचार-प्रसार एवं ब्रांडिंग सम्बन्धी चुनौतियाँ-

शहडोल संभाग के पर्यटन विकास की एक अन्य महत्वपूर्ण चुनौती समुचित प्रचार-प्रसार तथा ब्रांडिंग का अभाव है। जहाँ बांधवगढ़ को अपनी बाघ-जनसंख्या के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त पहचान प्राप्त है, वहीं विराट मंदिर, क्षीरसागर तथा दशरथ घाट जैसे अन्य महत्वपूर्ण स्थल राष्ट्रीय स्तर पर अपेक्षाकृत अल्प-ज्ञात हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि इन स्थलों का प्रचार-प्रसार मुख्यतः स्थानीय अथवा राज्य-स्तरीय माध्यमों तक ही सीमित रहा है, जबकि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर इनकी उपस्थिति अत्यंत सीमित है। इसके अतिरिक्त शहडोल संभाग के विभिन्न पर्यटन स्थलों के मध्य समन्वित पर्यटन परिपथ (सर्किट) के अभाव के कारण पर्यटक प्रायः इस संभाग की व्यापक पर्यटकीय विविधता से अनभिज्ञ रह जाते हैं तथा केवल बांधवगढ़ तक ही सीमित रह जाते हैं।

पर्यावरणीय एवं सामाजिक चुनौतियाँ-

शहडोल संभाग में पर्यटन विकास की एक अन्य गम्भीर चुनौती पर्यावरण संरक्षण तथा पर्यटन विस्तार के मध्य संतुलन स्थापित करने से सम्बद्ध है। बांधवगढ़ जैसे संरक्षित क्षेत्रों में अनियंत्रित पर्यटन-दबाव वन्यजीवों के प्राकृतिक व्यवहार तथा आवास-गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है, जिससे पर्यटन की पारिस्थितिक वहन-क्षमता का सावधानीपूर्वक निर्धारण आवश्यक हो जाता है। इसके साथ ही यह संभाग, अपने समृद्ध खनिज संसाधनों, विशेष रूप से कोयला, के कारण खनन-आधारित औद्योगिक गतिविधियों का भी केन्द्र है, जिसके परिणामस्वरूप वन-क्षरण तथा पर्यावरणीय प्रदूषण की समस्याएँ भी पर्यटन विकास की सम्भावनाओं को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। सामाजिक दृष्टि से भी यह चुनौती महत्वपूर्ण है कि पर्यटन से प्राप्त आर्थिक लाभ का समुचित भाग स्थानीय जनजातीय समुदायों तक पहुँचे, अन्यथा पर्यटन विकास केवल बाह्य निवेशकों तथा बड़े व्यावसायिक समूहों के लिए ही लाभकारी सिद्ध होगा, जिससे स्थानीय असंतोष तथा सामाजिक असमानता बढ़ने का खतरा रहता है।

एक अतिरिक्त चुनौती मौसमी असंतुलन तथा प्रशिक्षित मानव-संसाधन की कमी से सम्बद्ध है। जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया गया, शहडोल संभाग में पर्यटक-आगमन मुख्यतः शीत ऋतु तक सीमित रहता है, जिससे शेष वर्ष में स्थानीय पर्यटन-आधारित व्यवसायों, जैसे गाइड, होटल-कर्मी तथा हस्तशिल्प विक्रेताओं, की आय अनिश्चित तथा असमान बनी रहती है। इसके अतिरिक्त प्रशिक्षित पर्यटक-गाइड, बहुभाषी संचार-कौशल से युक्त कर्मचारी तथा आधुनिक आतिथ्य-प्रबंधन में दक्ष जनशक्ति की कमी भी इस क्षेत्र में एक उल्लेखनीय समस्या है। स्थानीय जनजातीय युवाओं को पर्यटन-सम्बन्धी कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं का अभाव इस समस्या को और अधिक गम्भीर बनाता है, क्योंकि इसके कारण अनेक पर्यटन-सम्बन्धी रोजगार अवसर बाहरी क्षेत्रों से आए कुशल कर्मचारियों द्वारा भरे जाते हैं, न कि स्थानीय निवासियों द्वारा।

पर्यटन विकास की संभावनाएँ-

धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाएँ-

शहडोल संभाग में धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन की अपार सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। अमरकंटक, जो पहले से ही एक प्रमुख धार्मिक तीर्थ है, तथा विराट मंदिर, जो अपनी कलचुरि-कालीन स्थापत्य कला के लिए उल्लेखनीय है, इन दोनों स्थलों को एक समन्वित धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित किया जा सकता है। इसके साथ ही दशरथ घाट जैसे रामायण-सम्बद्ध स्थलों को भी इस परिपथ में सम्मिलित करके इसे एक व्यापक आध्यात्मिक

यात्रा-अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, जो चित्रकूट जैसे बघेलखण्ड के अन्य प्रमुख रामायण-सम्बद्ध स्थलों से भी जोड़ा जा सकता है।

वन्यजीव एवं पारिस्थितिकी पर्यटन की संभावनाएँ-

बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान की अंतरराष्ट्रीय ख्याति के आधार पर शहडोल संभाग में वन्यजीव पर्यटन के और अधिक विस्तार की महत्वपूर्ण सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। बांधवगढ़ के समीपवर्ती वन क्षेत्रों में प्रकृति-भ्रमण, पक्षी-दर्शन तथा जनजातीय ग्राम-भ्रमण जैसी अतिरिक्त पारिस्थितिकी-पर्यटन गतिविधियों का विकास करके पर्यटकों के ठहराव की अवधि को बढ़ाया जा सकता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को अधिक व्यापक लाभ प्राप्त हो सकेगा। इसके अतिरिक्त अमरकंटक के वन क्षेत्रों में भी नियंत्रित पारिस्थितिकी-पर्यटन गतिविधियों, जैसे प्रकृति-पदयात्रा तथा जैव-विविधता अवलोकन, की सम्भावनाएँ मौजूद हैं, जो इस स्थल के धार्मिक पर्यटन को पूरक रूप से समृद्ध कर सकती हैं।

जल-पर्यटन एवं साहसिक पर्यटन की संभावनाएँ-

बाणसागर बांध का विशाल जलाशय जल-क्रीड़ा तथा साहसिक पर्यटन के विकास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण परन्तु अभी भी अल्प-उपयोगित सम्पदा है। नौकायन, जल-स्कीइंग, मत्स्य-पालन आधारित पर्यटन तथा जलाशय-किनारे शिविर स्थापना जैसी गतिविधियों के व्यवस्थित विकास से बाणसागर को मध्य भारत के एक प्रमुख जल-पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित किया जा सकता है। इसी प्रकार क्षीरसागर जैसे नदी-संगम स्थलों पर भी सुनियोजित पर्यटन अवसंरचना, जैसे तटीय भ्रमण-पथ तथा प्रकृति-अवलोकन केन्द्र, का विकास किया जा सकता है, जिससे ये स्थल केवल स्थानीय पिकनिक-स्पॉट से आगे बढ़कर क्षेत्रीय पर्यटन आकर्षण के रूप में विकसित हो सकें।

जनजातीय एवं ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएँ-

शहडोल संभाग की सघन जनजातीय जनसंख्या, विशेष रूप से गोंड, बैगा तथा कोल समुदाय, इस क्षेत्र में जनजातीय एवं ग्रामीण पर्यटन के विकास की एक महत्वपूर्ण परन्तु अभी तक अपेक्षाकृत अनुपयोगित सम्भावना प्रस्तुत करती है। जनजातीय ग्रामों में सुव्यवस्थित सांस्कृतिक भ्रमण, हस्तशिल्प प्रदर्शन-विक्रय केन्द्र तथा पारम्परिक भोजन एवं आवास अनुभव (होमस्टे) जैसी गतिविधियों के विकास से न केवल पर्यटकों को एक प्रामाणिक सांस्कृतिक अनुभव प्राप्त होगा, अपितु स्थानीय जनजातीय समुदायों को भी प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकेगा।

इस प्रकार का सामुदायिक-आधारित पर्यटन मॉडल शहडोल संभाग में सतत तथा समावेशी पर्यटन विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

क्षेत्रीय पर्यटन परिपथ एवं अंतर-राज्यीय संभावनाएँ-

शहडोल संभाग की भौगोलिक स्थिति, जो मध्य प्रदेश के अन्य प्रमुख वन्यजीव पर्यटन केन्द्रों, जैसे कान्हा तथा पेंच राष्ट्रीय उद्यान, तथा छत्तीसगढ़ राज्य की सीमा से निकटता रखती है, इस संभाग को एक व्यापक क्षेत्रीय पर्यटन परिपथ के केन्द्र-बिन्दु के रूप में विकसित करने की महत्वपूर्ण सम्भावना प्रदान करती है। बांधवगढ़-कान्हा-पेंच वन्यजीव परिपथ, जो पहले से ही अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों में लोकप्रिय है, में शहडोल संभाग के अन्य स्थलों, जैसे अमरकंटक तथा बाणसागर, को भी सम्मिलित करके इसे और अधिक समृद्ध बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अचानकमार-अमरकंटक जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र, जो मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ दोनों राज्यों में विस्तृत है, एक अंतर-राज्यीय पारिस्थितिकी-पर्यटन परिपथ के विकास की भी सम्भावना प्रस्तुत करता है, जिसमें दोनों राज्यों के पर्यटन विभागों के मध्य समन्वित योजना-निर्माण आवश्यक होगा।

इसके साथ ही शहडोल संभाग को बघेलखण्ड क्षेत्र के अन्य प्रमुख पर्यटन स्थलों, जैसे रीवा, सतना तथा चित्रकूट, से भी एक समन्वित पर्यटन परिपथ के माध्यम से जोड़ा जा सकता है, जिससे पर्यटकों को धार्मिक, वन्यजीव तथा सांस्कृतिक पर्यटन का एक व्यापक तथा विविधतापूर्ण अनुभव प्राप्त हो सके। इस प्रकार का क्षेत्रीय तथा अंतर-राज्यीय समन्वय न केवल शहडोल संभाग की पर्यटकीय दृश्यता (विजिबिलिटी) को बढ़ाएगा, अपितु यह पर्यटकों के औसत ठहराव-काल तथा व्यय को भी बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा, जिससे संभाग की समग्र पर्यटन-आधारित अर्थव्यवस्था को महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त होगा।

निवेश एवं सार्वजनिक-निजी भागीदारी की संभावनाएँ-

शहडोल संभाग में पर्यटन अवसंरचना के विकास हेतु सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल की महत्वपूर्ण सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। बांधवगढ़ के समीपवर्ती क्षेत्रों में पहले से ही निजी क्षेत्र द्वारा संचालित अनेक रिसॉर्ट सफलतापूर्वक कार्यरत हैं, जो यह प्रमाणित करते हैं कि उचित नीतिगत प्रोत्साहन तथा भूमि-उपलब्धता के साथ निजी निवेश इस क्षेत्र में पर्यटन अवसंरचना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। इसी मॉडल को अमरकंटक तथा बाणसागर जैसे अन्य स्थलों में भी विस्तारित किया जा सकता है, जहाँ सरकार भूमि, विद्युत तथा जल-आपूर्ति जैसी बुनियादी अवसंरचना उपलब्ध कराए, जबकि निजी निवेशक होटल, रिसॉर्ट तथा मनोरंजक सुविधाओं का निर्माण

एवं संचालन करें। 'एडॉप्ट ए हेरिटेज' जैसी राष्ट्रीय योजनाओं के अंतर्गत विराट मंदिर जैसे पुरातात्विक स्थलों के संरक्षण तथा पर्यटक-सुविधाओं के विकास हेतु भी निजी क्षेत्र की सहभागिता को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त हाल के वर्षों में भारत में उभर रहे नए पर्यटन प्रवृत्तियों, जैसे मीटिंग्स-इंसेंटिव्स-कॉन्फ्रेंसेज-एक्जिबिशन (एमआईसीई) पर्यटन तथा कल्याण-पर्यटन (वेलनेस टूरिज्म), की सम्भावनाएँ भी शहडोल संभाग में तलाशी जा सकती हैं। बांधवगढ़ के प्राकृतिक तथा शांत वातावरण में योग एवं ध्यान केन्द्रों की स्थापना, तथा अमरकंटक जैसे आध्यात्मिक स्थलों में आयुर्वेदिक कल्याण-केन्द्रों का विकास, इस संभाग को केवल पारम्परिक अवकाश-पर्यटन से आगे बढ़कर एक विविधतापूर्ण तथा उच्च-मूल्य वाले पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित कर सकता है, जो अधिक व्यय-सक्षम पर्यटक वर्ग को आकर्षित करने में सहायक होगा।

निष्कर्ष-

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहडोल संभाग अपनी विंध्य तथा मैकल पर्वत श्रेणियों की भौगोलिक स्थिति, समृद्ध वन-सम्पदा तथा नदी-प्रणाली के कारण पर्यटन विकास की दृष्टि से अत्यंत सम्भावनाशील क्षेत्र है। बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, अमरकंटक, बाणसागर बांध, विराट मंदिर तथा क्षीरसागर जैसे विविध पर्यटन स्थल इस संभाग की पर्यटकीय समृद्धि के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, जो धार्मिक, वन्यजीव, जल-आधारित तथा पुरातात्विक पर्यटन के एक बहुआयामी अनुभव का निर्माण करते हैं।

तथापि यह अध्ययन इस तथ्य को भी उजागर करता है कि शहडोल संभाग की यह विशाल पर्यटकीय सम्भावना अवसंरचनात्मक कमियों, संपर्क-सुविधाओं के अभाव, सीमित प्रचार-प्रसार तथा पर्यावरणीय एवं सामाजिक चुनौतियों के कारण अभी भी पूर्ण रूप से साकार नहीं हो पाई है। बांधवगढ़ को छोड़कर संभाग के अधिकांश अन्य महत्वपूर्ण स्थल राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर अपेक्षाकृत अल्प-ज्ञात बने हुए हैं, जो इस क्षेत्र की असमान पर्यटन विकास प्रवृत्ति को दर्शाता है।

यह अध्ययन इस तथ्य को भी रेखांकित करता है कि शहडोल संभाग में पर्यटन विकास की सफलता केवल अवसंरचनात्मक निवेश पर ही निर्भर नहीं है, अपितु इसके लिए क्षेत्रीय तथा अंतर-राज्यीय समन्वय, सार्वजनिक-निजी भागीदारी, स्थानीय जनजातीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता, तथा पर्यावरणीय संरक्षण के साथ संतुलित विकास की समग्र रणनीति आवश्यक है। बांधवगढ़ की अंतरराष्ट्रीय सफलता यह प्रमाणित करती है कि उचित निवेश तथा प्रचार-प्रसार से शहडोल संभाग के अन्य स्थल भी समान स्तर की पहचान प्राप्त कर सकते हैं। सम्पूर्णतः यह कहा जा

सकता है कि शहडोल संभाग में पर्यटन विकास हेतु समन्वित भौगोलिक योजना, अवसंरचनात्मक निवेश तथा सामुदायिक सहभागिता आधारित रणनीति अपनाई जानी चाहिए, जिससे इस क्षेत्र की समृद्ध पर्यटकीय सम्पदा का समुचित तथा सतत उपयोग सम्भव हो सके।

सुझाव-

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर शहडोल संभाग में पर्यटन विकास हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं। सर्वप्रथम, बांधवगढ़, अमरकंटक, बाणसागर, विराट मंदिर तथा क्षीरसागर जैसे स्थलों को एक समन्वित पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित किया जाना चाहिए, जिसमें इन स्थलों के मध्य सुगम सड़क संपर्क तथा नियमित परिवहन सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ, जिससे पर्यटक एक ही यात्रा में संभाग की सम्पूर्ण पर्यटकीय विविधता का अनुभव प्राप्त कर सकें। द्वितीयतः, इस संभाग के दूरस्थ पर्यटन स्थलों तक अंतिम-बिन्दु संपर्क-सुविधाओं (लास्ट-माइल कनेक्टिविटी) में सुधार हेतु सड़क अवसंरचना पर विशेष निवेश किया जाना चाहिए, तथा जबलपुर हवाई अड्डे से शहडोल संभाग तक नियमित तथा किफायती परिवहन सेवाओं का विस्तार किया जाना चाहिए।

तृतीयतः, बांधवगढ़ के अतिरिक्त अन्य पर्यटन स्थलों, विशेष रूप से अमरकंटक तथा बाणसागर, में गुणवत्तापूर्ण आवास तथा आतिथ्य सुविधाओं के विकास हेतु सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। चतुर्थतः, विराट मंदिर, क्षीरसागर तथा दशरथ घाट जैसे अपेक्षाकृत कम-प्रसिद्ध स्थलों के डिजिटल तथा पारम्परिक दोनों माध्यमों से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यवस्थित प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए, जिससे इन स्थलों को उनकी वास्तविक ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्ता के अनुरूप पहचान प्राप्त हो सके।

पंचमतः, बाणसागर बांध क्षेत्र में जल-क्रीड़ा तथा साहसिक पर्यटन अवसंरचना का व्यवस्थित विकास किया जाना चाहिए, जिसमें नौकायन, जल-स्कीइंग तथा जलाशय-किनारे शिविर सुविधाएँ सम्मिलित हों। षष्ठतः, गोंड, बैगा तथा कोल जनजातीय ग्रामों में सामुदायिक-आधारित पर्यटन मॉडल, जैसे होमस्टे, हस्तशिल्प विक्रय केन्द्र तथा सांस्कृतिक प्रदर्शन कार्यक्रम, विकसित किए जाने चाहिए, जिससे पर्यटन का आर्थिक लाभ सीधे स्थानीय समुदायों तक पहुँच सके।

सप्तमतः, बांधवगढ़ जैसे संरक्षित क्षेत्रों में पर्यटन की पारिस्थितिक वहन-क्षमता का वैज्ञानिक आकलन कर उसके अनुरूप पर्यटक-संख्या का विनियमन किया जाना चाहिए, जिससे पर्यावरण संरक्षण तथा पर्यटन विकास के मध्य संतुलन बना रहे। अष्टमतः, स्थानीय जनजातीय युवाओं के लिए पर्यटक-गाइड, आतिथ्य-प्रबंधन तथा भाषा-

कौशल में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए, जिससे पर्यटन-सम्बन्धी रोजगार अवसरों में स्थानीय समुदायों की भागीदारी बढ़ सके। नवमतः, शहडोल संभाग को कान्हा, पेंच तथा बघेलखण्ड के अन्य पर्यटन स्थलों से जोड़ने वाले क्षेत्रीय तथा अंतर-राज्यीय पर्यटन परिपथों के विकास हेतु मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ राज्यों के पर्यटन विभागों के मध्य औपचारिक समन्वय व्यवस्था स्थापित की जानी चाहिए। अंततः, शहडोल संभाग में पर्यटन विकास की समग्र योजना, क्रियान्वयन तथा समीक्षा हेतु मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम, जिला प्रशासन, वन विभाग तथा स्थानीय जनजातीय प्रतिनिधियों को सम्मिलित करते हुए एक स्थायी समन्वय समिति गठित की जानी चाहिए, जो नियमित रूप से पर्यटन विकास की प्रगति की समीक्षा कर सके तथा आवश्यकतानुसार सुधारात्मक कदम उठा सके, जिससे शहडोल संभाग अपनी वास्तविक पर्यटकीय क्षमता को साकार करते हुए मध्य प्रदेश के अग्रणी पर्यटन क्षेत्रों में सम्मिलित हो सके।

संदर्भ-

1. जिला गजेटियर, शहडोल, उमरिया, अनूपपुर, मध्य प्रदेश शासन।
2. बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान : भौगोलिक एवं पर्यटन विवरण, वन विभाग प्रतिवेदन, मध्य प्रदेश शासन।
3. अमरकंटक : धार्मिक एवं पर्यटन महत्व, स्थानीय शोध साहित्य।
4. बाणसागर परियोजना : वार्षिक प्रतिवेदन, जल संसाधन विभाग, मध्य प्रदेश शासन।
5. विराट मंदिर, सोहागपुर : स्थापत्य एवं ऐतिहासिक अध्ययन, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण प्रतिवेदन।
6. मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम, वार्षिक प्रतिवेदन एवं पर्यटन नीति दस्तावेज।
7. भारत में पर्यटन अवसंरचना विकास : समसामयिक विश्लेषण, नीति शोध पत्रिका।
8. शहडोल संभाग : प्रशासनिक एवं भौगोलिक परिचय, शहडोल संभाग पोर्टल, मध्य प्रदेश शासन।
9. जिला सांख्यिकीय हस्तपुस्तिका, शहडोल, उमरिया, अनूपपुर जिले, मध्य प्रदेश शासन।
10. सतत पर्यटन एवं सामुदायिक विकास : भारतीय सन्दर्भ, पर्यटन शोध साहित्य।